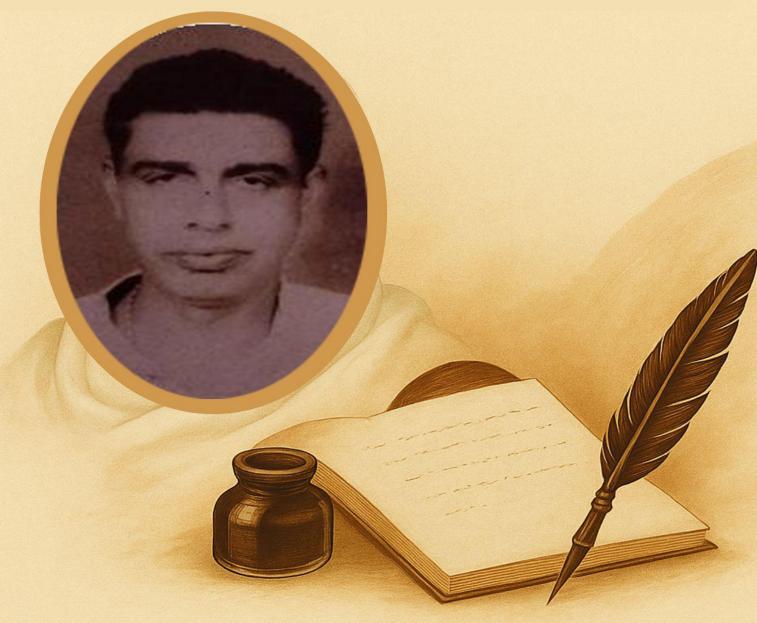
सम्पदा और कवि जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी'



लेखक – अंजनी कुमार उपाध्याय

सम्पदा न्यून और जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी'

Title: SAMPADA AUR KAVI JANARDAN PANDEY 'ANURAGI'

Author's name: ANJANI KUMAR UPADHYAY

Published by: MOTILAL WELFARE SEWA TRUST

Publisher's Address-MOTI BA NIWAS, NANDANA WARD WEST BARHAJ, DEORIA, U.P. 274601

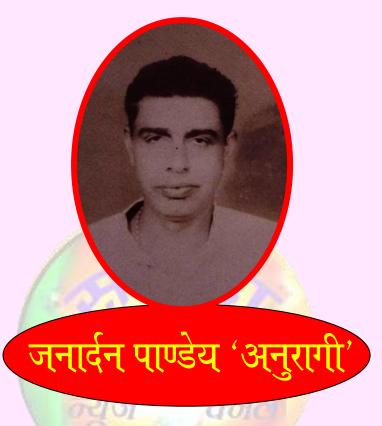
Printer's Details-Faiz & Jaish Publishing Team Nandana Pashchimi Barhaj Deoria U.P. 274601

Edition Details - I st Edition ISBN: 978-81-978583-8-3



Copyright © Motilal Welfare Sewa Trust

समर्पण



आपकी बहुमूल्य रचनाओं में से हमें कुछ रचनाएं प्राप्त हुई है। आपकी ये रचनाएँ आपके चरणों में समर्पित।

- अंजनी कुमा२ उपाध्याय

लेखक परिचय

नाम — अंजनी कुमार उपाध्याय
जन्म — 16 जनवरी 1963
जन्म स्थान — बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश
पिता का नाम — श्री मोती बीए
माता का नाम — श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय ।
प्रारंभिक शिक्षा— श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया ।
स्नातक — बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कुशीनगर ।
पोस्ट ग्रेजुएट — हिंदी में फिरोज गांधी कालेज, रायबरेली,
मनोविज्ञान में परास्नातक, बुद्ध पोस्ट ग्रैजुएट कालेज कुशीनगर ।

- 1982 से लेकर के उन्नीस सौ अड्डासी तक राजकीय निर्माण कार्य में सहायक।
- 1989 में संपदा का संपादन, <mark>नागार्जुन</mark>, डा क्षेमचंद सुमन, डाक्टर शंभू नाथ सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, सत्येंद्र मिश्र, रामदरश मिश्र एवं पिता श्री मोती बीए के साथ प्रबन्ध संपादक का कार्य।
- साथ ही साथ ज्योतिषाचार्य का भी कार्य।
- अवैतिनक शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य, अग्रसेन इंटर कालेज लखनऊ, मदन मोहन मालवीय इंटरमीडिएट कालेज, गोरखपुर, सरोजनी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरहज, श्री कृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देविरया में अध्यापन, विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान बरहज, सेंट जेवियर्स कालेज बरहज, प्रधानाचार्य में अध्यापन, बाबा बैद्यनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिगनी सोंहौली, देविरया में 2009—2010 में प्रधानाचार्य, वर्तमान में एचपीजीडी चिल्डेन अकादमी बरहज में अध्यापन कार्य।
- श्री मोती बीए के साथ फिल्मों में निर्माण कार्य ठकुराइन, चंपा चमेली और गजब भईले रामा में फिल्म निर्माता के पी शुक्ला, राकेश पांडे, सुजीत कुमार, पद्मा खन्ना, रवींन्द्र जैन के साथ कला और संस्कृति पर कार्य । श्री मोती बीए की फिल्म मातृमंदिर, 'प्रेम के बॅसुरिया' और 'प्रेम प्रेम है' के निर्माण कार्य के लिये कार्य।
- श्री मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी द्वारा पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग और उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत।
- श्री मोतीलाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टी ।
- जवाहर प्रकाशन बरहज देवरिया के स्थापना में बहुमूल्य योगदान तथा उसके पदाधिकारी।
- श्री मोती बीए पुस्तकालय के अध्यक्ष ।

- श्री मोती बीए द्वारा स्थापित संपदा न्यूज के संचालक एवम संपादक प्रमुख ।
 संपदा न्यूज चौनल के एडिटर इन चीफ। रेडियो मोती के प्रमुख डायरेक्टर।
- पत्रकारिता में, ''जुल्म से जंग, हम वतन, न्यूज एक्सप्रेस चौनल में प्रमुख रूप से रिपोर्टिंग, महाखबर, स्वतंत्र चेतना एवं अन्य दैनिक समाचार पत्र'' में भी सक्रिय पत्रकारिता ।
- स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य । कविता, कहानी, आलोचना, समालोचना, निबंध, संस्मरण,
- ऐतिहासिकता और धार्मिक स्थलों के खोज पर विस्तृत रिपोर्ट ।
- संपदा न्यूज के वेबसाइट के ओनर। श्री मोती बीए के समस्त फिल्मों और गीतों के संकलन कर्ता।
- संपदा के वेबसाइट पर श्री मोती बीए की पुस्तकों के प्रकाशनकर्ता।
 प्रमुख रचनाएं—
- 1. समाचार पत्रों की नजरों में मोती बीए (भाग-01)
- 2. आत्मकथा—मोती बीए (भाग–01)
- 3. आत्मकथा—मोती बीए (भाग—02)
- 4. सरयू से सागर तक (भाग-01) मोती बीए के फिल्मी गीतों और फिल्मों का संकलन, वो गीत जो फिल्मों में आए और उनके नाम नहीं लिखे गए, मोती बीए के चोरी गए फिल्मों के गीत ।
- 5. आपका मोती मोती बी<mark>ए को</mark> लिखे गए 15<mark>1 पत्र</mark>
- 6. उड़ती हुई साधना और बैठे हुए सन्यासी
- 7. सम्पदा न्यूज और जनार्दन पाण्डेय अनुरागी
- 8. सम्पदा न्यूज और आचार्य <mark>महेन्द्र शास्त्री</mark>
- 9. सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय

निवास — श्री मोती बीए निवास, नंदना पश्चिमी, बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश 274601

भूमिका

एक समय था जब महाकवि श्याम नारायण पांडे, रामधारी सिंह दिनकर, सोम ठाकुर, मोती बीए जैसे तमाम कवि, किसी को बड़े ही प्यार से अपने बीच सम्मान देते थे तो वह नाम था, जनार्दन पांडे अनुरागी। समय ऐसा बदला कि यह नाम लोगों के बीच से विस्तृत होने लगा। अनुरागी जी से बड़ा लगाव था भारत के महान कवियों का और भारत के सम्मानित साहित्यकारों का। आज नेट की दुनिया में यह नाम डूबता नजर आ रहा है, कहीं खोजने पर भी अनुरागी जी की कविता, आवाज और तस्वीर मिल नहीं रही है, इस स्थिति में संपदा न्यूज ने यह निश्चय किया है कि जनार्दन पांडे अनुरागी जी की कविताओं को इधर-उधर से खोज करके एक नेट संस्करण के रूप में श्री मोती बीए के जयंती पर्व 1 अगस्त 2025 पर इसे प्रस्तुत किया जाए। इस कार्य के लिए सबसे पहले हम उन लोगों को धन्यवाद दे दे जिन लोगों के सहयोग और आशीर्वाद से हम यह कार्य संपन्न कर पाए हैं। यह नाम है नागरी प्रचारिणी सभा बरहज देवरिया के अध्यक्ष, आंचल भारती के संपादक श्री जय नाथ मणि त्रिपाठी जी, नागरी प्रचारिणी सभा देवरिया के पूर्व मंत्री एवं वर्तमान उपाध्यक्ष कवि श्री इंद्र कुमार दीक्षित जी, श्री मोती बीए द्वारा 1989 में स्थापित संपदा न्यूज की प्रति, सरयू धारा अक 12, डॉक्टर देवेंद्र नाथ तिवारी फेसबुक, श्री अभय कुमार पांडे, श्री पंडित विनय मिश्र, श्री ओंकारनाथ पांडे (अनुरागी जी के पुत्र), बृजेश नाथ पांडे (अनुरागी जी के पौत्र), इसके अतिरिक्त सम्पदा न्यूज को संपादित करने वाले हमारी टीम। इन सभी लोगों के हम आभारी हैं जिनकी मदद से आज " संपदा न्यूज और अनुरागी जी'' यह नेट पुस्तक हम आप लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे

अनुरागी जी के संदर्भ में कुछ लिखने के पहले हम आपको श्री मोती बीए का एक संस्मरण प्रस्तुत कर रहे हैं। यह 1952 का समय था। अनुरागी जी कक्षा 11 में पढ़ रहे थे। अपने कॉफी पर उन्होंने लिखा था, "अंधकार के बीच जिंदगी, बुझे स्नेह के दीये, मेरी जीवन नैया को पर करो, हे मोटी भी है इस पंक्ति को पढ़ने के बाद मोती बीए।" इस पर ध्यान श्री मोती बीए का जनार्दन पांडे की तरफ गया और उनसे उनका हार्दिक लगाव बढ़ता गया । अनुरागी जी ने कविताएं लिखनी शुरू कर दीं और श्री मोती बीए ने मार्गदर्शन करना शुरू कर दिया। कविताओं को पढ़ने के बाद मोती बीए को लगा कि इनमें अनुराग बहुत है, इसलिए इनका नाम उन्होंने अनुरागी रख दिया। अनुरागी जी को अपने साथ वो कवि सम्मेलनों में ले जाना शुरू कर दिया। इन्हीं कवि सम्मेलनों में उनकी मुलाकात श्याम नारायण पांडे से हुई। श्याम नारायण पांडे को अनुरागी जी से विशेष लगाव पैदा हो गया और श्री मोती बीए और श्याम नारायण पांडे के साथ उन्हें बडे—बडे सम्मेलनों में जाने लगे।

इस प्रकार अनुरागी जी का संबंध भारत के महान कियों के बीच बनने लगा । भोलानाथ गहमरी, धरीक्षण मिश्र, रामधारी सिंह दिनकर, सोम ठाकुर जैसे कियों के बीच इनका काव्य पाठ होता और जनता इन्हें विशेष रूप से सम्मान देती । अनुरागी जी की आवाज इतनी सुंदर थी कि जब वह किवता सुनाते थे तो एक बहुत बड़ी भीड़ उसे किवता की आवाज में डूब जाती थी। मुंबई में काव्य पाठ करते समय सोम ठाकुर के साथ इन्होंने किवता पढ़ी थी ''बड़े शौक से दिन जवानी के काटा, न होना था बिगाड़ा, न होना था टाटा'' वहां की जनता ने बहुत ही जोरदार तरीके से इनका सम्मान किया था। सिवान में एक किव सम्मेलन उन्होंने किवता सुनाते समय पढ़ा था कि ''अंगना में भइले अंजोर'' यह किवता उन्होंने रात को 12:00 बजे सुनाई थी और 12:00 बजे रात को सुनने के बाद लोगों का हुजूम उन्हों घेर लिया और वह जिद करने लगे कि हमें और किवता सुननी है, हमें और सुनाये। संचालक को अनुरोध करना पड़ा कि और भी किव है उन्हें भी सुना जाए।

अनुरागी जी आज यहां ऐसा लग रहा है कि उपस्थित है। यहां वह नित्य प्रायः अक्सर आया करते थे। यही वह स्थान है जहां पर वह बैठकर रात को कविता सुनाया करते थे। हमें अच्छी तरह याद है, 1988 के पूर्व की बात है, उन्होंने यह सुनाया था कि ''आउ किरिनिया बुझौवल बुझाई'' और दूसरी कविता सुनाए थे, '' 6 बरिस के पहले हमार ओंकार'' एक कविता और भी सुनाए थे, ''सुहागिन अपना रूप संवार'' एक कविता और वो सुनाए थे, ''अरे तुम कैसी मौन मलीन'' वह यहां आते रहते थे और कविता पाठ करते रहते थे। ये इतना

वह यहां आते रहते थे और कविता पाठ करते रहते थे। ये इतना लोकप्रिय हो गए थे कि इतने से अंदाज लगाया जा सकता है कि श्री मोती बीए की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्यक्ष अनुरागी जी की कविताओं को बातों बातों में कोट किया करती थी। श्री मोती बीए के शब्दों में जब वह बहुत ही परेशान हो जाए करते थे तो हमारी श्रीमती जी लक्ष्मी देवी उपाध्याय यह कहा करती थी कि ''जिनकी के भाग फरीयाले दुखा के''

अनुरागी जी ने जवानी में ही जोगी वस्त्र धारण कर लिया था । उन्होंने रमराजी फुआ, कविता में इसका जिक्र भी किया कि ''अनुरागी के देख बैरागी काहे दुनिया रोई, देहिया धइले ना जाने की केकर का गति होई।''

जनार्दन पांडेय अनुरागी जी का पारिवारिक परिचय बड़ा ही विलक्षण है । उस समय चाहे जो रहा हो लेकिन यदि उसे कहा जाए तो काफी गौरव महसूस होता है । यह देवरिया जिले के भागलपुर ब्लॉक के बिलया नामक ग्राम में पैदा हुए थे। इनके पिता का नाम शिव वचन पांडे था। पिता तीन भाई थे । बिलया के अतिरिक्त गड़ौना के पास इनकी खेती थी । परिवार संयुक्त था । जनार्दन पांडे अनुरागी जी दो भाई थे। दूसरे भाई का नाम था ताराचंद पांडे । यह ब्लॉक में कार्यरत रहे। इनका विवाह सत्यव्रतजी महाराज के भाई सूर्यनारायण पांडे जी की कन्या से जिनका नाम कौशल्या देवी था उन्ही से हुआ था। सूर्यनारायन पांडे जी की कन्या सुमित्रा देवी का विवाह एक ही परिवार में इनके भाई ताराचंद पांडेय से हुआ था। अनुरागी जी के पुत्र ओंकार नाथ पांडे और शैलेंद्र कुमार पांडे पुत्री किरण ऐसा उनके रचनाओं से मिलता है । अनुरागी जी के ससुराल पक्ष का भी यहां जिक्र करना आवश्यक है। सत्यव्रत जी महाराज की भाई थे हरदत जी महाराज, जो सन्यासी हो गए थे। सत्यव्रत जी महाराज स्वयं एक सिद्ध संत और आश्रम के तीसरी पीठाधीश्वर थे। उनके छोटे भाई सूर्य नारायण पांडे की शेष एक कन्या का विवाह आश्रम के पीठाधीश्वर चंद्रदेव शरण जी महाराज जी के पुत्र सत्यदेव जी से हुआ था, जिनका नाम द्रोपती देवी था। सूर्यनारायण पांडे जी की एक कन्या का विवाह अक्षयवर मिश्र से हुआ था जिनका नाम उर्मिला देवी था। श्री विनय मिश्र इन्हीं के लड़के हैं । इस प्रकार आश्रम बरहज जनार्दन पांडे अनुरागी से पूरी तरह जुड़ा हुआ है ।

हम इस डिटेल के लिए आभारी हैं श्री पंडित विनय मिश्र का जो उन्होंने हमें यह जानकारी उपलब्ध कराई। वैसे यह जानकारी अंचल भारती 1982 के अंक में हमें मिली लेकिन इसे पूर्णता प्रदान करने में विनय मिश्र जी का विशेष योगदान हम मानते हैं। अनुरागी जी की कविताओं को धर्मवीर भारती ने तीन भागों में बांटा है। सामाजिक , पारिवारिक और आध्यात्मक । सामाजिक कविताओं में वह भोजपुरी के मदमस्त है ऐसा उनका विचार है । पारिवारिक कविताओं में भोजपुरी को के कबीर होने से बच गए हैं। उनके इस टिप्पणी से स्पष्ट होता है कि अनुरागी जी कवि के रूप में एक विशाल साहित्य के स्वामी रहे। यह अलग बात है कि समय ने उनके साथ न्याय नहीं किया और उनकी कविताएं तो लाखों ने सुनी लेकिन अब वह स्मरण में ही रह गए।

हम आपको यह अंक प्रस्तुत करते समय काफी आहलादित हैं। इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही है कि अनुराग जी का नाम जन—जन तक पहुंच जाए। उनकी कविताएं हर एक लोगों के पास स्थान बना ले, इसीलिए हमने इसे नेट पत्रिका का रूप दिया है । इससे मेरा कोई व्यावसायिक संबंध नहीं है। यह जिनकी है उन्हें उनके चरणों पर अर्पित है । हम सिर्फ अनुरागी जी के नाम को बचाने के लिए यह कार्य किए हैं। मेरे इस कार्यक्रम में, मेरे इस कार्य में, जितने लोगों का सहयोग है, उनका हम आजीवन ऋणी रहेंगे।

- अंजनी कुमा२ उपाध्याय

निवास-श्री मोती बीए निवास, नन्दना पश्चिमी, बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश २७४६० १

www.sampadanews24.blogspot.com

www.facebook.com/anjaniupadhyay www.pinterest.com/sampadanews www.x.com/anjanikumarupadhyay www.linkedin.com/anjaniupadhyay email-editorsampadanews@gmail.com Mob. No. 8299015136



प्रार्थना गणेश जी की

राउर हाथी के मुँह एक जनावे एक से भइल अनेक रउआँ पहिलो पूज्य इकाई एसे पहिले माथ नवाई देवता दया जो होइत आज पल में पूरा होइत काज राखीं अनुरागी के टेक राउर हाथी के मुँह एक

प्रार्थना सरस्वती जी की

कहँवा बाड़ शारद माई
देतू आपन झलक देखाई
घट में हो जाइत उजियार
पराइत पल में मोह अन्हार
सूझित सहजे भाव अपार
रचना होइत रस के धार
तोहरी चरन कमल परि जाई
कहाँ बाँड़ शारद माई

रउआँ राखी लाज हमार

बल बुधि जब कामे ना आइल, धड़ली नाम अधार । होत मोत कुल कुटुम जगत के, सब मतलब के यार । छूछा के पूछा ना कोई, फूटे नैन निहार । सुख के साज सवारी सगरी, साँई सिरजन हार । अनुरागी जो देर भइल त, हँसी करो संसार ।।

अलम अब रउरे बा सरकार

रउएँ मातु पिता गुरु स्वामी, सब विधि राखन हार । कवले सहीं दुसह दुख दारिद, वान्हि कुटुम परिवार । मन माया रंग रंगल न माने, एको बाति विचार । सेवा भक्ति ज्ञान कुछ नाहीं, अवगुन लाख हजार । अनुरागी जो ख्याल करबिना, साँसति ढेर हमार ।

बाउर कहे सजी संसार

जब से जग के आशा तिज के, बाना लीहलीं धार । केहू कहे ढोंग के बाना, केहू रंगल सियार । केहू कहे कि परदा भीतर कवनो करी सिकार । केहू कहे निवाही नाहीं, ई मितमन्द गँवार । अनुरागी प्रभु जो ठुकराइब, देखबि कबन दुआर ।।

<mark>जेकर गावे वेद बड़ाई</mark>

शेष शारदा पार न पावे, गावत गुन निपुनाई । ग्राह मारि गजराज उबारे, ध्रुव की पीर मेटाई । हिंसक पशु सरूप जे धारे, भक्त की टेक दृढ़ाई । तारे गनिका गीध अजामिल पायी सदन कसाई । काहें ऊ दयालु अनुरागी, सरन गए दुकराई ।।

रे मन हरि की ओर निहार

जेकर दया हरे भव संकट, देत पदारथ चार । जीयत घूंट विषय विष पीयत, वृद्धि अमिय के धार । मरिचा मधुर कबों ना लागे, लाख उपाय विचार । कहत सुनत थोरे—दिन बाकी, अबहीं होश सँभार । अनुरागी प्रभु छन में करिहें, सरनागत निस्तार ।।

रे मन हरि जेकर रखवार

ओसे महाकाल भय खा के, छन में माने हार । भव सागर के अगम धार, के सहजे करे ऊ पार । जीवन बन्धन मुक्त जीव तब, स्थित प्रज्ञ विचार । भीतर बाहर एक निहारे, हिय आनन्द अपार । अनुरागी प्रभु रक्षक जेकर, ऊ सबसे बरियार ॥

जेकर राम नाम आधार

ओकरा मोह मान कुछ नाहीं, सरल सुभाव विचार । दुश्मन होत बने निरेखि के, ओकर भाव सिंगार । विघ्न सिद्ध के रूप धारि के, करे मधुर मनुहार । जइसे मीन सुखी जल भीतर, तलफे जबहि निकार । अनुरागी वइसे ना जीए, हरि के नाम बिसार । ***

रउआँ धाइ धरों पतवार

भव सागर के अगम लहर पर, काँपे नाव हमार । दसों दिसा से खूब झंकोरे, रिंह रिंह विषय बेआर । छूअत कवों अकास उमिंग के, प्रबल मनोरथ ज्वार । अब केंहु होत मीत ना दूसर, जेकर करी पुकार । अनुरागी भरोस अब रउरे, करी घरी में पार ।।

केसे कवन कवन दुख गाई

केहू कहे कि बाबा आपन, परिचय कुछ बतलाई । कवन गाँव का नाँव ह राउर, जाति पाँति फरियाई । समुझाई कवने कारन से, भरमी भेष रंगाई । राउर के गुरु कवन पंथ ह, थोरे में दरसाई । अनुरागी प्रभु जग के सुनि अब, मन ही मन मुसकाई ।

हरि के सरन सदा सुखदाई

तुलसी सूर कबीर जतावे, गावे मीराबाई । जाति यवन रहीम रसखानी, सरन गहे गुन गाई । पलटू दादू सहजो नानक, दिरयादास बुझाई । एके बाति सभे किह राखो, छन्द प्रबन्ध सजाई । अनुरागी बिन सरन कटे ना, भव दुख लाख उपाई ।।

हरि के हृदय प्रेम के खान

शिव विरंचि जाने उनके गति, गावे वेद पुरान । अवगुन एक विचारे ना प्रभु, जब सरनागत जान । पशु राछस सुग्रीव विभीषण, कइलें इन्द्र समान । केतने अधम भक्ति दृढ़ पवलें, केतने पद निर्वान । अनुरागी छल छोड़ि प्रेम गह, तव छन छन कल्यॉन ।। ***

रे मन सपना सब संसार

अपना अपना कहि ले जबले, घेरे मोह अन्हार । उपजे विनसे जग के छन में, सब नश्वर आकार । तू मूरख जीए थोरे दिन, गहि के रूप अधार । भोगत भोग छूटि जब जाई, छन में रूप किनार । अनुरागी तब बूझि परी तोहि, भजन जनम के सार ।।

हरि बिन सब वैभव बेकार

अन धन सोना माल खजाना, कोठी कटरा कार । बल्ब सही स्विच सही जगह से, सब लाइन के तार । थोरे में मन सोच समझ ले, बिना करेन्ट अन्हार । चाहत होइ सारथक जो, जग के सम्बन्ध हजार । अनुरागो तो भी हिर भज मन, झूठा अहं बिसार।।

जग से सधे न एको काम

चाहत भोग सिद्ध निधि के जो, तो भी भज सियराम । जेकर शील चान्दनी शीतल, तेज दिवा के घाम । जेकर शक्ति पवन नभ धावे, बादर सिर धरि धाम । झरना झरे पाइ जेकर गति, लहे न कबो विराम । सफल मनोरथ अनुरागी अब, रटि के ओकर नाम ।।

अब ले बाति समुझ ना आइल

आजु काल्हि कहते जीवन के, अन्तिम छोर धराइल । माया संग सुख विषय भोग हित, रे मन राशि रचाइल । तुष्टि भइल अबले ना तोरा, अबौ फिरे अकुताइल । धोबी के कुक्कुर न घाट घर, कवरा कहीं भेटाइल । अनुरागी प्रभु सरन गए बिन, मानुष जनम नसाइल ।।

माया छल वल बहुत देखावे

कोइलाइल विषयन के आगी, रहि रहि के धधकावे । साधन योग बिराग ज्ञान सब, छन के छार बनावे । तब धरि पाँइ राहि में रोके, मोहक रूप रचावे । भांति भाँति भय प्रीति जनावे, बरनन होइ न पावे । माया माफिक फिरे प्रभू जब, अनुरागी अपनावे ।।

मन ना माने लाख मनाई

बन्धन मोक्ष कार्य के कारन, कवनेड्गा सुधिआई । मन मेढ़क बहु रंग विषय जल, साधन तट बइठाई । पल में कूदि मोह लहरन पर छलके छन सुख पाई । एही फेर अबेर देर अब, साँझि गइल नियराई । अनुरागी प्रभु सेवा दे के, सब भव भीर मेटाई ।।

हरि के भजन करत कठिनाई

पर उपदेस सरल बा लेकिन, अपने भज त बुझाई । सन्त महन्थ कुटी करि राखे, चेलने के समुदाई । गृही पुत्र परिवार जोगावे, ममता मोह बढ़ाई । ई कुल्हि मजन भगति के बान्धे, बहुत विधिन उपजाई । अनुरागी प्रभु कृपा मिले बिन, ना हरि नाम रटाई ।।

रे मन नाहक जन्म गंवाई

आगम निगम कहे मानुष तन, बड़े भागि तू पाई । साधन तन हरि नेह लगा ले, छाड़ि कपट चतुराई । अब की बेर चूक जो भारी, फिर चौरासी जाई । अधम निलज्ज फिरे माया संग, प्रभु उपकार भुलाई । अनुरागी अब जाने हरि बिन, केहू काम न आई ।

हरि विन होत न दूसर कोई

रे मन साँच बुझाई ओ दिन, जब उनके गति होई । काल्हि करब किह भजे न प्रभु के, जीवन धन सब खोई । काल कपार करे बहु फेरा, मोह निशा तू सोई । जागे सपन साँच ना सूझे, झंखु बइट के रोई । अनुरागी तोरे बस रहिके, हिर से हाथ न धोई ।।

के बा हमसे बाउर ढेर

प्रभु उपकार बिसार फिरे मन, छन में छत्तीस फेर । कइल धइल भूसा के लोपल, बूझे भइल अनेर । ठोकर खाइ बानि ना छोड़े, अबले अधम लथेर । चित चंचल कवनो बल नाहीं, हो गइल बहुत अबेर । अनुरागी प्रभु सरन मिले जो, आम्हर हाथ बटेर ।।

हरि के भजन अडोल कमाई

दिन दिन बढ़े घटे ना तिनको, नित खरचे अधिकाई । रे मन बाँस बराबर धन लिह, ना सन्तोष भेटाई । पाए खरचे धरे सजी दुख, आखिर साथ न जाई । धन कारन अवले अनुरागी, कल बल छल अपनाई । अब प्रभु भजन रतन गिह राखे, सब वैभव ठुकराई ।।

रहु मन हरदम हरि की आस

जेकर दया संजी सुख साजे, हरदम हरष हुलास । जे समरथ सिरजन के साई, सब सुख ओकरे पास । तेकर चरन सरन तजि मूरख, नाहक फिरत उदास । देव दुलम दिय देह दयामय, साधन हेतु लिबास । अनुरागी प्रभु कुछ अदेय ना, गहि ले दृढ़ विसवास ।।

हरि का सरनागत से प्यार

जन जाने जोगवें प्रभु जइसे, पुतरी पलक ओहार । जे गहि चरन सरन भरोस बल, जीयत एक अधार । अकरे बस रहि फिकरें हरिष हिर, व्यापक सत्व विसार । जइसे मातु पिता सनेह सुत, नाचत नाच हजार । अनुरागी वंइसे प्रभु पालत, राखत प्रान सम्हार ।।

रे मन हरि अभिमत दातार

प्रसत अभाव तोहि तब दौरत, दर—दर दाँत उधार । काहें जात लजात सकोचत, तू हिर के दरबार । देर न दारिद दरत दयामय, देखत दीन दुआर । अधम अबोध अधी अनुरागी, तोरे बस लाचार । बाति समुझ गहते प्रभु पद जो, पूजित आस हमार ।।

भज मन रामचरन चितलाई

जवने चरन धूरि के परसे, गौतम नार सुहाई । जेकर पाइ पादुका पूजत, भरत भोग ठुकराई । चलत सोचि मग दाहिन बाँए, लखन गोड़ारि बराई । पद धोअत तट कुल समेत तरि, केवट नाव चढ़ाई । अनुरागी पावत पद पावन, पावन पद तू पाई।।

हरि बिन अब कुछ नीक न लागे

खान पान रस रंग भोग सब, परल तेंवाइल आगे । मान बड़ाई जस प्रभुता से, छन छन मन बैरागे । होत मोत कुल कुटुम सनेही, अनुरागी अब त्यागे । नीन न नैन चौन ना ही में, रहत रैन भर जागे । झरना झूठ झरे दोउ आँखिन, भीख दरस के माँगे ।।

हरि अब दुविधा हरों हमार

आपन आन नीक बाउर से, सासित सोर सवार । जेइसन बा बिसवास डोलहिल, ओइसन ज्ञान बिचार । अपने रहिन न अपने भावे, चित दिन रंन खभार । अजब अन्हार दुसह दारुन दुख, द्वैत दुरे दुसवार । अनुरागी प्रभु कृपा किरन जो, एकोहम् उजियार ।।

अब हम हो गइली बेकाम

मेखड़ा छूटे काम ना आई, ई चलनी के चाम । जेकरे संग रहि दसा भइल ई, छाती छेद तमाम । कवने सुख स्वारथ सधले ऊ, लेई सोझ सलाम । पहिले हाथों हाथ उठावल, ऊहे बुझे खाम । अनुरागी अपने गति रोवे, असरा राउर राम ।।

दुनियाँ दू दिन के पहनाई

जीव जन्तु प्रानी पशु पछी, जे आई ऊ जाई । तू मन वाति एक ना माने, मान मोह अझुराई आखिर काल्हि चले की बेरा, मनही मन पछताई । बहुते प्रेम जनाई जग जो, चरचा इहे चलाई । आइल रहे इहाँ अनुरागी, गेरुआ रंग रगाई ।।

रउआं करी दया के दान

दीन दयाल नाम जग जाने, बरने वेद पुरान । बुधि वैभव विद्या बल नाहीं, अति अन्हार अज्ञान । हरदम रहे अभाव भाव के, मन अवगुन के खान । एइसन के असहाय हाय जेहि, पाइब जोहि जहान । अनुरागी अपनाइ करी प्रभु, प्रन के एक प्रमान ।।

केहू का हमरा के बूझी

आपन ज्ञान मान दरसाइव, कहि कहि बाति अबूझी । मेष निहारि सन्त जिय जाने, सब हमरी पर लूझी । एइसन पाठ पढ़ाइब जग के, अपने में सब जूझी । एतना छल जेकरे हिय नाचे, ओकरा साँच न सूझी । अनुरागी तजि राम रसायन, अबहिन चाभत खूझी ।।

एइसन हालि करम के फेर

नेह लगाइ बिरह दुख, दरस न देत सवेर । जागत जोहत रैन चैन ना, नैनन जोति अनेर । साँस लगे जस साँपिन डोलत, साँपहि बन में हेर । जबले प्रभु प्रीतम न उदय रिव, भाव किरन ना घेर । तबले अनुरागी के ई दुख, कइसे होइ निबेर ।।

रहु मन जइसे राखे राम

जेतना दें दयाल प्रभु सोई, रखु ओतने से काम । देह घरे इच्छा के कारन, उपजे गरज तमाम । तू मकरो मन जाला बीने, अझुरि कहे विधि वाम । दृढ़ विसवास नाम जप धारे, ध्यान चरन के थाम । साधन सहज सजी सुधियावे, अनुरागी बिन दाम।।

हरि बिन सून सजी संसार

हाली हिर से नेह लगा मन, तिज के मोह पसार । ई संसार प्याज के गाँठी, बोंकला के आकार । लाख उधार सार ना सूझे, जनमत जन्म हजार । प्रभु से प्रीति लगे बिन मूरख, ना होई उद्धार । अनुरागी अन्हार जग जोहे, जोति किरन टहकार ।।

रे मन जीवन के दिन थोर

छाड़ि कपट छल बल चतुराई, हिर से नाता जोर । नाम रतन धन माल खजाना, आठो जाम बटोर । सरे गले ना होत पुराना, लूटि ना पावे चोर । काल बली जबने छन आके, जीवन लेई छोर । अनुरागी पछताइ रहे तब, एक चली ना तोर ।।

रे मन राम भरोसा भारी

जे प्रभु आस भरोस जिए जग, ऊ दिन रैन सुखारी । ध्रुव प्रहलाद अभय भरोस बल, नारि न होत उधारी । जब भरोस गजराज गहे जिय, धाइ धरे धनु धारी । तू मन लोभ मोह बस नाचे, दर दर होइ भिखारी । अनुरागी प्रभु राम दया बिन, के सुख साज सँवारी ।।

हरि बिन के जग पालनहार

गरभ रचे तन दूध भरे थन, जनमें देत अहार । चिरई चहकत चारा चूगे, ना घर बान्हि बलार । अजगर के उतफाल न कवनो भछ भेजत सरकार । मन अपना के करता माने, सासति सहत हजार । अनुरागी जब छुटे भरम ई, सूझे हरि उपकार ।।

हमरी बेर भइल बा देर

एइसन हालि रही जो राउर, सरन गही के फेर । द्रुपद सुता के लाज बचवलीं, तुरते सुनि के टेर । ग्राह प्रसत छन बीति न पावल, गज से नाता ढेर । दीन दयाल दया ना भइले, दुनियाँ कही लमेर । अनुरागी लजाइ दिन काटी, हरि आपन गति हेर ।।

जे ना राम चरन अनुरागी

भवसागर डू<mark>बी उतिराई, कवनो तीर न</mark> लागी । केतनो कोठी महल उठाई, धन जोगाइ के जागी । जस प्रभुता लिह मान बड़ाई, ना पावन पद जागी । अबले बाति समुझ लेना मन, जनमें के तू बागी । अनुरागी कहले ऊ कइसे होई विषय बिरागी ।।

सोहर

अंगना में भइले अंजोर, सुहाग बड़ मोर किरिन छितिराइल हो, ऊषा दिहली सुरुज अवतार, अन्हार लकाइल हो।

विहगन बाज बजावे, भ्रमर गुन गावेकली मुसुकाइल हो, झुर—झुर झुरेले बेयार पियारी, सुरभि अगराइल हो।

कुसुम कनक रंग फूले, मगन मन झूले हरियारी रंगाइल हो, मानो संतति पाइ सुहागिन, अवरी सोहाइल हो।

पुरइन झुलहा लगावे, कमल के झुलावे अजब छवि छाइल हो अलि काजर बिन्दु 'डिडौना, लिलार छु आइल हो

माथे मुकुट गिरि चमके, समुन्दर दमके लहर लहराल हो मानो निरख-निरख अनुरागी नयन मा अघाइल हो।

एइसन जनम तोहार, जगत उजियार अभाव भुलाइल हो, तोहरे जनमत जोति सुरूप, सजो सुख आइल हो।

गारी धुन में निरगुन जनम इ सगरो सिराइल हो हमरा कुछ ना बुझाइल । जीतत कोड़त, बोवत—काटत सब दिनरात ओराइल हो ।

> सझुराई जवने उहे अझुराइल सझुरत अवरि अझुराइल हो, हमरा कुछू ना बुझाइल ।

हीरा, रतन धन संत लदावें अबे हमरा कुछुना किनाइल हो, हमरा कुछ ना बुझाइल ।

केहू कहे साधो पार उतरिजा हम तीरे ठाढ़, लजाइल हो, हमरा कुछ ना बुझाइल ।

अनुरागी होख दयालु उदव गुरु सब तिज पद लपटाइल हो, हमरा कुछ ना बुझाइल ।

रमराजी

अनुरागी के देखि बिरागी काहे दुनिया रोई देहिया धइले ना जानी कि केकर का गति होई

हमरे घर के पीछे रहती ह बुढ़िया रमराजी जिनिगी भर बिधवापन खेपली खइली सतुआ भाजी जनमे उनके बपसी मरले गवना होते माई सेजिया चढ़ते पिया गुजरले अइसन करम कमाई।

ससुरे उनके कोइला बिरसल नइहर भइल अन्हरिया बोझा भइल जवानी दिन—दिन बैरिन भइल अमिरिया सोना जेकर खाक हो गइल हीरा हो गइल माटी ऊ कइसे डोली दुनिया में कइसे जिनिगी काटी।

रमराजी नइहर में आके कइलिन दर—दर फेरा जेकर टुकड़ा खइली ओ दिन ओही के घर डेरा ईटा उनके रहल सिर्हानी, गुदरा भइल रजाई माथे पर सेवार छितराइल, आँखिन गंगा माई।

राखी में आगी के एइसन लुगरी में सुघराई देखि—देखि के फटल करेजा केतना ई दुख गाई अनुरागी के देखि बिरागी काहे दुनिया रोई देहिया धइले ना जानी कि केकर का गति होई।

जवने राति के चान हेराइल ओकर कवन अँजोरिया जवने नदिया सुखल पानी ओकर कवन लहरिया जिनिगी जेकर रेत हो गइल ओकर कइसन धारा ओकर कइसन उद्गम—संगम ओकर कवन किनारा।

रमराजो कवने अरार पर सुधि के दियना बारें केकरे खातिर हँसि—हँसि आपन मातल रूप सँवारें केकर रहिया जेहि—जेहि के सँझिया रोज बोलावें केसे मन में बतिया कहि—कहि रतिया के भरमावे होत बिहाने हाथ जोरि के केकर सगुन मनावें मुँह पर जोति जगावे खातिर के—के रोज जगावें कोंढ़ी जवन किरिन ना देखलासि ओकर कवन कहानी बेइल जवन अलम ना धइलिस ओकर कवन जवानी।

एइसन अधमारल जिनिगी पर के ना आँसु बहाई केकर कठिन करेजा जे रमराजी के दुख गाई अनुरागी के देखि बिरागी काहे दुनिया रोई देहिया धइले ना जानी कि केकर का गति होई।

दुनिया अपने रंग में मातल आपन साज सँवारे रमराजी मुँह में अँचरा दे हरदम सुसुकी मारें हाथ गोसँइया दुख ना जनल ऽ कइल ऽ तू मनमानी रमराजी के आगी दिहल ऽ अवरू सबके पानी।

जेकर साज बिगड़ब 5 ऊहे दर—दर ठोकर खाई अपनी मुअले छाती पर ऊहे कोदो दरवाई रमराजी के सखी सलेहरि हँसि—हँसि ताना मारें भाई—बहिनी टुकड़ा दें त झइहावें दुतकारें।

केहू कहे पिसाचिन अबहीं के—के के—के खाई केहू कहे अभागिन अबसे हमरे घर जिन आई दइवे जारल जिनिगी के नू दुनिया नून लगावे ओकर के दाही दुनिया में जेके राम सतावें।

दहकल जिनिगी रमराजी के, के ना खाक रमाई रमराजी के मरजादा पर के ना माथ नवाई अनुरागी के देंखि विरागी काहे दुनिया रोई देहिया धइले ना जानी कि केकर का गति होई।

सुहागिन

सुहागिन अपना रूप संवार । बनी हो अब कैसी अनजान, करो चिर नूतन की पहिचान, बिटोरो अपना मानस रत्न, निहारो चिरातीत के स्वप्न, प्रभु ने जाना पूर्ण प्रणय, बहाया करूणा सिक्त मलय, बनाया जग पथ आज अभय, मिटा जग जीवन का संशय, प्रकृति करती प्रतिक्षण मनुहार, सुहागिन अपना रूप संवार ।

मिलन का लिए मधुर आधार, पहन ले आलिंगन का हार, जगा दे प्राणों में मधु प्यार, बसा दे चितवन का संसार, भुलाकर यौवन का अभिमान, छोड़कर लज्जा का परिधान, अधर पर भर—भर कर मुस्कान, प्रणय की मधुमय बेला जान, करो नैसर्गिक नव श्रृंगार, सुहागिन अपना रूप संवार।
